



॥ सीता राम ॥

श्री अद्वैताचार्य जी महाराज की विरचित पुस्तक, साधना सिद्धि से शुद्ध बजरंग बाण उपलब्ध करवा रहा हूँ | लखनऊ के श्री अशोक श्रीवास्तव (Mob. 9415567319), महाराज जी के परम प्रिय शिष्य, ने पुस्तक देखकर मेहनत से स्वयं टाइप करके मुझे जनहितार्थ ये उपलब्ध करवाया है | पुनः संशोधन करके, PDF फ़ाइल में दे रहा हूँ | श्री बजरंग बाण पाठ से अनेकों लोगों के कार्य सिद्ध हुए हैं, इसमें न तो कोई अतिशयोक्ति है और न ही कोई संशय |

कार्य की सिद्धि के लिए कलिकाल में इससे अच्छा अन्य कोई उपाय नहीं है, ऐसा हमारे महाराज जी कहा करते थे | उस समय जो बजरंग बाण हमें उपलब्ध थे, या तो त्रुटिपूर्ण थे और या आधे-अधूरे | शुद्ध बजरंग बाण मुझे महाराज जी द्वारा 70 के दशक में मिला था | मैंने इसका अनुष्ठान किया, अन्य को भी करवाया, जिसने भी संयम और पूर्ण आस्था से किया, उन सबको चमत्कारिक रूप से वांछित फल मिला |

बजरंग बाण का पाठ नित्य करने का नियम बना लें | संयम, आस्था और समय हो तो अनुष्ठान भी करें | महाराज जी कहते थे कि अगर अनुष्ठान के

रूप में बजरंग बाण कर रहे हैं, तब अपने गुरुजनों से परामर्श, उसको करने के दिशा-निर्देश अवश्य ले लें ।

एक बात का ध्यान रखें किसी के भी अनहित की भावना से तो बिल्कुल भी इसका पाठ न करें ।

अनुष्ठान कैसे करें, इसके लिए यू ट्यूब में महाराज जी द्वारा बनवाए गोपाल राजू के अन्य वीडियो भी देख सकते हैं । एक का लिंक है:

At: @gopalraju

टाइटल -

Bajrang Baan Anusthan | बजरंग बाण अनुष्ठान का सरलतम उपाय | चमत्कारी बजरंग बाण प्रयोग -

<https://youtu.be/uiF-FjHHvF8>

साधना सिद्धि पुस्तक के पन्ने भी अंत में दे रहे हैं, कहीं हमसे त्रुटि बन गई हो तो कृपया संशोधन कर लें ।

एक महत्वपूर्ण बात बीज मंत्रों से संबंधित । उच्चारण में कहीं त्रुटि न हो । अब क्योंकि बजरंग बाण में बीज भी आते हैं, उनका शुद्ध उच्चारण किसी योग्य विद्वान से अवश्य कर लें । जो हमारे संज्ञान में आया, हो सकता है कि कोई सहमत न हो, उसका एक वीडियो भी बना दिया है । मन है तो यू ट्यूब में वो भी देख सकते हैं । लिंक है:

टाइटल -

हींग हीम या हरीम (Hreeng Hreem Or Hareem) ? क्या है शुद्ध उच्चारण ?

Click at:

<https://youtu.be/HGbD7CxTPI>

॥ ध्यान श्लोक ॥

अतुलितबलधामं हेमशैलाभदेहं
दनुजवनकृशानुं ज्ञानिनामग्रगण्यम्।
सकलगुणनिधानं वानराणामधीशं
रघुपतिप्रियभक्तं वातजातं नमामि॥

हं हनुमते नमः

श्री गुरुदेव भगवान की जय

श्री बजरंग-बाण

निश्चय प्रेम प्रतीति ते,

विनय करे सन्मान ।

तेहि के कारज सकल शुभ,

सिद्ध करै हनुमान ॥

जय हनुमन्त सन्त हितकारी ।
सुनि लीजै प्रभु अर्ज हमारी ॥

जन के काज विलम्ब न कीजै ।
आतुर दौरि महासुख दीजै ॥

जैसे कूदि सिन्धु वहि पारा ।
सुरसा बदन पैठि बिस्तारा ॥

आगे जाइ लंकिनी रोका ।
मारेहु लात गई सुर लोका ॥

जाई विभीषण को सुख दीन्हा ।
सीता निरखि परम पद लीन्हा ॥

बाग उजार सिन्धु मँह बोरा ।
अति आतुर यम कातर तोरा ॥

अक्षय कुमार को मारि संहारा ।
लूम लपेट लंक को जारा ॥

लाह समान लंक जरि गई ।

जय जय ध्वनि सुरपुर में भई ॥

अब विलम्ब केहि कारण स्वामी ।

कृपा करहु प्रभु अन्तर्यामी ॥

जय जय लक्ष्मण प्राण के दाता ।

आतुर होइ दुख करहु निपाता ॥

जय गिरिधर जय जय सुख सागर ।

सुर समूह समरथ भट नागर ॥

ॐ हनु हनु हनु हनुमन्त हठीले ।

बैरिहि मारु बज्र सम कीले ॥

गदा बज्र ले बैरिहिं मारो ।

महाराज निज दास उबारौ ॥

सुनि हंकार हुंकार दै धावो ।

वज्र गदा हनु विलम्ब न लाओ ॥

ॐ ह्रीं ह्रीं ह्रीं हनुमन्त कपीशा ।

ॐ हुं हुं हुं हनु अरि उर शीशा ॥

सत्य होहु हरि सत्य पाइके ।

राम दूत धरु मारु धाइके ॥

जय हनुमन्त अनन्त अगाधा ।

दुख पावत जन केहि अपराधा ॥

पूजा जप तप नेम अचारा ।

नहिं जानत है दास तुम्हारा ॥

वन उपवन जल थल गृह माँहीं ।

तुम्हारे बल हम डरपत नाहीं ॥

पाँय परौं कर जोरि मनावौं ।

अपने काज लागि गुण गावौं ॥

जय अंजनी कुमार बलवन्ता ।

शंकर स्वयं वीर हनुमन्ता ॥

बदन कराल दनुज कुल घालक ।

भूत पिशाच प्रेत उर शालक ॥

भूत प्रेत पिशाच निशाचर ।

अग्नि बैताल वीर मारी मर ॥

इन्हें मारु तोहि शपथ राम की ।

राखु नाथ मर्याद नाम की ॥

जनक सुता पति दास कहावों ।

ताकी शपथ विलम्ब न लावों ॥

जय जय जय ध्वनि होत अकाशा ।

सुमिरत होत दुसह दुःख नाशा ॥

शरण शरण कर जोरि मनावों ।

यहि अवसर अब केहि गोहरावों ॥

उठु उठु उठु तोहिं राम दोहाई ।

पाँय परों कर जोरि मनाई ।

ॐ चं चं चं चं चपल चलन्ता ।

ॐ हनु हनु हनु हनु हनु हनुमन्ता ॥

ॐ हं हं हाक देत कपि चंचल ।

ॐ सं सं सहमि पराने खल दल ॥

अपने जन को कस न उबारो ।

सुमिरत होत अनन्द हमारो ॥

ताते विनती करौं पुकारी ।

हरहु सकल प्रभु विपति हमारी ॥

ऐसो बल प्रभाव प्रभु तोरा ।

कस न हरहु दुख संकट मोरा ॥

हे बजरंग बाण सम धावो ।

मेटि सकल दुख दरश दिखाओ ॥

हे कपिराज काज कब ऐहौ ।

अवसर चूकि अन्त पछितैहौ ॥

जन की लाज जात ऐहि बारा ।

धावहु हे कपि पवन कुमारा ॥

जयति जयति जय जय हनुमाना ।

जयति जयति गुण ज्ञान निधाना ॥

जयति जयति जय जय कपिराई ।

जयति जयति जय जय सुखदाई ॥

जयति जयति जय राम पियारे ।

जयति जयति जय सिया दुलारे ॥

जयति जयति मुद मंगल दाता ।

जयति जयति त्रिभुवन विख्याता ॥

यहि प्रकार गावत गुण शेषा ।

पावत पार नहीं लवलेशा ॥

नाम रूप सर्वत्र समाना ।

देखत रहत सदा हरषाना ॥

विधि शारदा सहित दिन राती ।

गावत कपि के गुण गण पाती ॥

तब सम नहीं जगत बलवाना ।

करि विचार देखेँ विधि नाना ॥

यह जिय जानि शरण तब आई ।

ताते विनय करौं चित लाई ॥

सुनि कपि आरत वचन हमारे ।

मेटहुँ सकल दुःख भ्रम भारे ॥

यहि प्रकार विनती कपि केरी ।

जो जन करै लहै सुख ढेरी॥

या के पढ़त वीर हनुमाना ।

धावत बाण तुल्य बलवाना॥

मेंटत आय दुःख क्षण माहीं ।

दे दर्शन रघुपति ढिग जाहीं ॥

पाठ करै बजरंग बाण की ।

हनुमत रक्षा करै प्राण की ॥

दीठ मूठ टोनादिक नासै ।

पर कृत यन्त्र मन्त्र नहिं त्रासै ॥

भैरवादि सुर करे मिताई ।

आयसु मानि करे सेवकाई ॥

प्रण कर पाठ करे मन लाई ।

अल्प मृत्यु गृह दोष नसाई ॥

आवृत ग्यारह प्रति-दिन जापै ।

ताकी छाँह काल नहिं चापै ॥

दै गुग्गुल की धूप हमेशा ।

करै पाठ मन मिटे कलेशा ॥

यह बजरंग बाण जेहि मारै ।

ताहि कहो फिर कौन उबारै ॥

शत्रु समूह मिटै सब आपै ।

देखत ताहि सुरासुर कापै॥

तेज प्रताप बुद्धि अधिकाई ।

रहैं सदा कपिराज सहाई ॥

प्रेम प्रतीतिहिं कपि भजै,

सदा धरै उर ध्यान ।

तेहि के कारज तुरत ही,
सिद्धि करै हनुमान ॥

अकिंचन निरीह गोपाल राजू

❖ बजरंग-बाण ❖

॥ श्री राम ॥

निषय प्र प्रतीति ते, विलय करे सन्माल ।
 तेहि के काल सकल भुग, सिद्ध करे हनुमान ॥
 जय हनुमन्त सन्त हितकारी ।
 सुनि लीकै प्रभु अर्ज हमारौ ॥
 जन के काल विलम्ब न कीकै ।
 आतुर दैरि मरुसुख दीकै ॥
 जैसे कूदि सिन्धु बहि पाया ।
 सुरसा बदन पैदि बिलसाया ॥
 आगे जाई लीकनी रोका ।
 मरिहु लात गई सुर लोका ॥
 जाई विभेषण को सुख दीन्हा ।
 सीता सिन्धु परम पद लीन्हा ॥
 बाण उजाड़ सिन्धु मँह बेरा ।
 अति आतुर यम कातर तोरा ॥
 अक्षय कुमार को मारि सँझया ।
 लूम लोटे लंक को जारा ॥
 लाह समान लंक जरि गई ।
 जय जय धनि सुरपुर में भई ॥
 अब विलम्ब कोहि कारण स्वामी ।
 कृपा करहु प्रभु अन्तर्यामी ॥
 जय जय लक्ष्मण प्राण के दाता ।
 आतुर होइ डूब करहु निपाता ॥
 जयगिरिधर जय जय सुख सागर ।
 सुर समूह समरथ भट नागर ॥

(2)

ॐ हनु हनु हनु हनुमन्त हठीले ।
 बैरिहि मारु बज्र सम कीले ॥
 गदा बज्र लै बैरिहिं मारो ।
 महाराज निज दास उचारो ॥
 सुनि हंकार हुंकार दै धावो ।
 बज्र गदा हनु विलम्ब न लावो ॥
 ॐ हौं हौं हौं हनुमन्त करीशार ।
 ॐ हुं हुं हुं हनु अरि उर शिशार ॥
 सत्य होहु दैरि सत्य पाइके ।
 राम दूत धरु मारु धाइके ॥
 जय हनुमन्त अनन्त अगाधा ।
 दुरा पावत जन कैहि अपराधा ॥
 पूजा जय नैम अचारा ।
 नहि जानत है दास तुम्हारा ॥
 बन जपवन जल थल गृह मँदी ।
 तुम्हार बल हम इरपत नाहीं ॥
 पाँच पर्य कर जोरि मनावो ।
 आपने काज लागि गुण गावो ॥
 जय अंजनी कुमार बलवन्ता ।
 शंकर स्वयं बीर हनुमन्ता ॥
 बदन कराल दनुज कुल धालक ।
 भूत पिशाच भैर उर शालक ॥
 भूत भैर पिशाच निशाचर ।
 अग्नि कैताल बीर मारी मरौ ॥
 इन्हें मारु तोहि शपथ राम की ।
 राहु नाथ मर्याद नाम की ॥
 जनक सुता पति दास कहावो ।
 ताकी शपथ विलम्ब न लावो ॥

(3)



जय जय जय ध्यति होत अकाराग ।
सुमितल होत दुसह दुःख नाशाग ॥
शरण शरण कर जोरि मनावाँ ।
यहि अवसर अब कोहि गोव्यावाँ ॥
चटु चटु चटु तोहि राग होनाई ।
पाँच परी कर जोरि मनाई ।
ॐ वं वं वं वं वं वपल चलान्ता ।
ॐ हनु हनु हनु हनु हनु हनु हनुमन्ता ॥
ॐ हं हं होल देत कोरि वचल ।
ॐ सं सं सहस्र पराने खल दल ॥
अपने जन को कस न जगो ।
सुमितल होत अनन्द हमारो ॥
ताते विनती करौ पुकारो ।
हस्तु सकल प्रभु विपति हमारी ॥
ऐसो बल प्रभाव प्रभु तोरा ।
कस न हस्तु दुख संकट मोरा ॥
हे बजराग बाण सम धारो ।
मेदि सकल दुख दराट दिबाजो ॥
हे काशिराज कोज कर पेहो ।
अवसर कृपिक अन्त पलिबोहो ॥
जन की लाज जात रोहि बारा ।
धावटु हे कोरि पवन कुमारा ॥
जयति जयति जय जय हनुमाना ।
जयति जयति गुण ज्ञान विधाना ॥
जयति जयति जय जय कशिराई ।
जयति जयति जय जय सुबदाई ॥
जयति जयति जय राम शिवारे ।
जयति जयति जय शिवा उलारे ॥

(4)

जयति जयति मुद्र मंगल दाना ।
जयति जयति विभूवन विख्याता ॥
यहि प्रकार गावत गुण शेषा ।
पावत पाप नहीं लवलेशा ॥
नाम रूप सर्वत्र समाना ।
देखत रहत सदा हर्याना ॥
विधि शारदा सहित दिन राती ।
गावत कोरि के गुण गण पाती ॥
तब सम नहीं जगत बलवाना ।
करि विचार देखेऊँ विधि नागा ॥
यह निव जगति शरण तब आई ।
ताते विनय करौ चित लाई ॥
सुनि कोरि आगत बचन हमारे ।
मेठई सकल दुःख भ्रम भारे ॥
यहि प्रकार विनती कोरि कैरी ।
जो जन करे लहे सुख देखी ॥
या के पढ़त कीर हनुमाना ।
धावत बाण तुल्य बलवाना ॥
मॅतत आय दुःख क्षण माहीं ।
हे दर्शन खुपति दिग जाहीं ॥
पाट करे बजराग बाण को ।
हनुमत रक्षा करै प्राण की ॥
देठ मूठ दोनारिक नासे ।
पर कृत यन्त्र मन्त्र महिं ज्ञासे ॥
शैव्यादि सुर करै भिलाई ।
आयसु माति करै सेवकाई ॥
प्रण कर पाठ करै मन लाई ।
अल मृत्यु गूढ दोष नसाई ॥

(5)



आवृत मयाह प्रति-दिन जाये ।
 ताकी धाँह काल महि जाये ॥
 ३ गुणुल की धूप हसेशा ।
 करे पाठ मन मिटे कलेशा ॥
 यह बचयेग बाणो जेहि मरे ।
 ताहि कहौ फिर कौन उबरै ॥
 शत्रु समूह मिटे सब आये ।
 कायै ॥
 तेज देखत ताहि सुरापुर ।
 कायै ॥
 तेज प्रलय बुद्धि अखिकाई ।
 सदा रहै ॥
 प्रेम प्रतीतिहि कोय मने, सत धरै उर धान ।
 तेहि के काण तुल ही, मिहि करै हनुमान ॥

❖ कवच ❖

कानन, भूपर, वाहि, बचाहि, महाविज, काहि, दवा अरे करे ।
 संकट कोटि जहाँ तुलसी हिरा, मातु-पिता, पुत्र-भूषु न करे ॥
 यावहि राम कृपावु तर्क, हनुमान से वैकल है जोहि करे ।
 नाक, रसालक, मूला मंत्र, युवायक एक सदायक मरे ॥



(6)

॥ श्रीराम ॥

❖ श्री सीता वालीसा ❖

शीत मलीन शीत अति, मुमिरी जनक कुमारी ।
 अरुण-अशोक छु मति, मोहि किणोहि उबारि ॥
 जब जानकी बुद्धि प्रभा मति ।
 शरणगात कहै देखि परम गति ॥
 १ परमानुरक्ति-भक्ति प्रेमा अति ।
 २ कति निर्ममर निराल-सुरत शक्ति ॥ २ ॥
 उरभर स्थिति प्रलय कारिनी ।
 विविध हरि हर की शक्ति धारिनी ॥
 ३ तारन-तरन मुसीभा तारिनी ।
 ४ जमा यमा शतल उबारिनी ॥ ४ ॥
 नयन उजयन्ता नयन उधारिनि ।
 योग दृष्टि सत्ता विस्तारिनि ॥
 ५ परलया बाणी वसु धारिनि ।
 ६ मात बिन्दु अनुस्वार अवतारिनि ॥ ६ ॥
 अलख अगम अनाम वसु रणा ।
 शब्दाक्षर ध्वनि लय अनुरुपा ॥
 ७ श्री परतर श्रेयसा अन्या ।
 ८ अपरम्यार अपार स्वरुपा ॥ ८ ॥
 ९ राम ब्रह्म सच्चिदानन्द धन ।
 १० श्री यशुवर राघव रघुनन्दन ॥
 ११ निर्गुण निराकार जग बन्दन ।
 १२ तब दासन हिन धरुज मनुज तन ॥ १२ ॥

(7)